CHAPTER-VII

MEMBERS BLOSSOM

(DISCLAIMER: AIACE neither takes responsibility of Originality and veracity of contributions nor subscribe to the theme and views of the contributors)

रंजन कुमार श्रीवास्तव

सदस्य संख्या – M-818,

धनबाद, (झारखण्ड)

प्रिय मित्रों,

हम सेवा निवृत्त कोल इंडियंस को पेंशन बहुत कम मिलता है और इसमें कोई बढ़ोतरी नहीं होती। कोल इंडिया पेंशनर्स एसोसिएशन और ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ कोल एक्ज़ीक्यूटिव्स **AIACE** इसमें सम्मानजनक वृद्धि के लिए संघर्षरत है।

बतौर पेंशनभोगी वरिष्ठ नागरिक मैं अपनी एक स्वरचित लघु कविता आपके साथ साझा कर रहा हूँ....

पेंशन है बूढ़ों की लाठी
उस पर भी नज़र गड़ाते हो
धनिको का कर्ज माफ करते
पेंशन पर टैक्स लगाते हो

माना पेंशन है नाकाफ़ी
पर पाता हूं इससे सबकुछ
पोते पोती को दे टॉफ़ी
मुझको मिल जाता है कुछ सुख

यह स्वाभिमान से जीने का
उत्साह बढ़ाता जाता है
मित्रों को चाय पिलाने का
ये परमानंद दिलाता है

पेंशन मेरी मर्यादा है
यह मेरा एक सहारा है
पेंशन के बल पर ही मेरा
अब होता सिर्फ़ गुजारा है

पैसे कम हैं जरूर लेकिन
यह देता मुझको बहुत मान
कम में जीता हूं खुश रहता
रहता है इसमें मुझे शान

अब उम्र हुई है कम खाओ
खुश रहो हमेशा ग़म खाओ
पेंशन को शनै:शनै:खर्चो
थोड़े में काम चला जाओ

जो सिंहासन पर बैठे हैं, उनसे आरज़ू करे रंजन। अब और नहीं अन्याय करें, महफ़ूज रखें मेरा पेंशन॥

Sudeshna Saha
w/o Sri Amitava Saha
Retd. D(F), BCCL
Membership No. M-3527
Asansol (West Bengal)

Farce
(R.G.Kar murder case merged with Rakshabandhan)

Every issue turns into
A Triggered Political Agenda;
One who goes, goes for ever,
Scorning every propaganda.

Candles burn and candles melt
In tears rolling down,
The earth puts up with all injustice
Though crimson dries to brown.

Issues grow and issues die,
Leaving behind traces;
Crumbling down the wobbly base
Of overlapping faces.

The Trust and Faith of Brotherhood
Lies heavy on the wrist;
Promise breaks as fragile sherd
As Tryst turns to Trist.

The wheel of Time keeps rolling on,
Voices rise and fade,
Those who lose, do lose for ever
With pent up bereavement.

डॉ. कविता विकास

(स्तंभकार व शिक्षाविद्)

धर्मपत्नी श्री विकास कुमार

सदस्य सख्यां 3467,

T-1801**, Homes** 121**, Sector** 121**, Noida**

Mobile - 9431320288

ग़ज़ल - 1

ख़्वाहिशों ने उन्हें भी कर दिया घायल की तरह
पाँव के नीचे थी जिनकी ज़मीं मखमल की तरह

ज़िंदगी आ रही है पेश किसी छल की तरह
ख़्वाब दिखला के नए बीत गयी कल की तरह

ज़िंदगी से मेरी बारिश कभी जाती ही नहीं
रोज़ आँखों में उतरती है वो बादल की तरह

जो झलक दिखला के सहरा में कहीं गुम हो गया
ढ़ूँढ़ते हैं उसे हम तो किसी पागल की तरह

नाउम्मीदी को पसरने नहीं देना मन पर
खींच लेगी नहीं तो पाँव ये दलदल की तरह

ज़िंदगी के लिए रिश्ते भी ज़रूरी हैं कुछ
ये हवा से हैं कभी तो कभी हैं जल की तरह

पूछते रहना फ़क़त प्रश्न ही मक़सद नहीं हो
काश हम उठ सकें प्रश्नों के किसी हल की तरह

ग़ज़ल - 2

वक़्त की लकीरों से भर गए जो चेहरे थे
यादों की विरासत से हो गए वो गहरे थे

दोस्त यूं तो अपने थे, वक्त पड़ने पर लेकिन
कोई निकले गूंगे तो कोई निकले बहरे थे

रात चाँदनी, पहलू तेरा, वो हया मेरी
मिलते हैं कहाँ वो इक वक्त जो सुनहरे थे

हम कहाँ मुलाक़ातों में कभी रहे तन्हा
शोर थी ख़मोशी की, जुगनुओं के पहरे थे

काश पाठशाला फिर मिल जाए हमको वो जिसमें
करते - करते हुड़दंगी सीखते ककहरे थे

यूं ही तो नही नीला हो गया समंदर था
जाने कितनी नदियों के दर्द इसमें ठहरे थे

कम कैसे हो 'कविता', हो गया बदन भारी
दौर एक वह भी था हम बहुत छरहरे थे

कुबेरनाथ मिश्र अनंत

(M-1898)
वाराणसी

एआईएसीई के महत्व को बताती हुई एक कजरी

मुहल्ले में कोई सहयोगी न देखात बा।
जिया घबरात बा ना।---------------1
केकरा के बोलाईं फोन केकरा के लगाईं।
कैसे अस्पताले जाईं दवाई कैसे कराईं।
दुइ दिनवा से देहिया गिरात बा।
जिया घबरात बा ना।।--------------2
बेटा बहू बहुत दूर कमाई कर रहे भरपूर।
सेवा निवृत्ति माई बाप यहाँ पड़े मजबूर।।
कोई सम्बन्धी न अपने पास बा।
जिया घबरात बा ना।।--------------3
जब से आयल सब जन क सेवा निवृत्ति।
घटि गईल सब जन के तन मन की शक्ति।।
मदद के लिए यहाँ कोई खास बा।
जिया घबरात बा ना।।--------------4
आस पास के जवान करने गये अपना काम।
कोई खोलत दुकान कोई बेचत सामान।।
कोई आफिस में काम करै जात बा।
जिया घबरात बा ना।।--------------5
बच्चे सब गये स्कूल पढ़ने में हुये मसगूल।
ट्यूशन व खेल के आगे बुजुर्ग सेवा जाते भूल।।
घरवा सवकर खाली देखात बा।
जिया घबरात बा ना।।-------------6

मुहल्ले के बचे भूप नहीं है हमरे अनुरूप।
यदि आने की देंगे छूट तो वे हमें लेंगे लूट।।
ठगी क ही उनकर पूरी जमात बा।
जिया घबरात बा ना।।-------------7
जिसे चाहिए समाधान वो आये ऐस के धाम।
सुनाए अपनी समस्या बनाए अपना सारा काम।।
अब ऐस का ही भरोसा देखात बा।
जिया मुस्करात बा ना।।------------8
जब जायेगा ऐस का फोन बाबू नहीं रहेगा मौन।
आफिसर पूछेगा आवेदन रद्दी में फेंका कौन कौन।।
वह बाबू सब सस्पेंड होवै जात बा।
जिया मुस्करात बा ना।।------------9
जब जाई ऐस की चिट्ठी बन्द होगी सब सिट्टी-पिट्टी।
पर्वत जैसी उनकी शान गिरकर बन जायेगी मिट्टी।।
नाजायज धन बाबू अब नहीं कमाते बा।
जिया मुस्करात बा ना।।-----------10
बन के ऐस का सदस्य कर ले अपना जीवन मस्त।
संगठन बन जाये जबरदस्त जिससे वैरी होवे पस्त।।
पेन्शन मेडिकल की वृद्धि सुनात बा।
जिया मुस्करात बा ना।।----------11

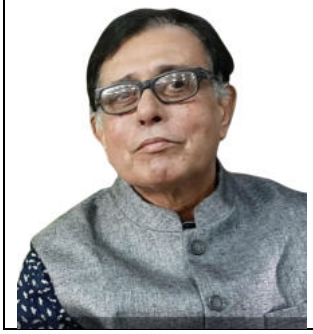

Arun Chattopadhyay

Membership No. 326

Kolkata

Over a cup of tea

Every morning,
When the sun rises
Through the eastern horizon,
Washing the sky
With his soft blessings of red,
I,
Sitting at my balcony
Gaze around,
Over a cup of tea
Going through the
Headlines of newspaper,
I look around.
I feel Her touch,
In the eternal music
Flowing in ecstatic joy and tranquility
In the sweet melody
Of singing birds,
With colourful flowers around.
The fragrance of Nectar
Has swept me away,
Far away.
I feel her touch,
Gazing around,
Over a cup of tea.

नमिता सेनगुप्ता
धर्मपत्नी, स्व. के आर सेनगुप्ता
सदस्य संख्या-A-20109

परिवार

संबंधों की बुनियाद है परिवार,
दृढ़संकल्पों की गढ़त दीवार।
विश्वास के गारे से होती चुनाई,
स्नेह के रंग लगे घर में अपार।

छत माँ के शीतल आँचल का,
द्वार पिता के मजबूत कंधों का।
झरोखा भाई बहन की किलकारी,
देहरी वयोवृद्धों के आशीषों का।

भोर की आरती से होता सवेर,
संस्कृति संस्कार की बहे धार।
संध्या तुलसी चौरा पर दीप बाती,
उत्सवों में परिवार लगता त्यौहार।

पिता विशाल वटवृक्ष की छाया,
माँ जगती जीवन के प्रति माया।
भाईयों से सुरक्षा की अभिलाषा,
संपूर्णता ही परिवार की परिभाषा।

परिवार ही है जीवन की युक्ति,
समर्पण त्याग की सच्ची अनुभूति।
सकारात्मकता के सुंदर उपवन,
पारिवारिक बंधनों को दे द्युति।

संस्कार

संस्कार बीज बोये माँ ने मेरे हृदय,
जल उर्वरक सभ्यता संस्कृति द्वय।
नन्हा पादप सज्ञानै:शनै:विकसित,
संतति को घनी छाँव देगा अतिशय।

आनंदमय परिवेश जीवन का आधार,
विनष्ट उच्छृंखलता के खर पतवार।
आचरण से फूँटते संस्कार के कोपल,
जीवन शिराओं में शुद्धता के संचार।

संस्कार ही ढहाता प्रचीर शत्रुता के,
अंतस्तल में पुष्प खिलाता सौहार्द्र के।
मंदिर मस्जिद गिरजा स्थापित हृदय में
उत्कृष्ट भावना रखता विश्व उत्थान का।

जड़ों को कृतज्ञता दर्शाती नत डालियाँ,
शाख में मुकुलित शुचिता की कलियाँ।
हठात जड़ों को उर भूमि से किया विलग,
सभ्यता संस्कृति की उजड़ गई बगिया।

अनाचार कुसंस्कार का घट लगा भरने,
वृद्ध श्राम खुले जड़ों को स्थापित करने।
अविवेक अमानुषिकता के हुआ जन्म,
पतन के नभ में स्वछंद हो लगे उड़ने।

संस्कार हो गया अब जीर्ण पुरातन,
आधुनिकता किया धारण छल वारण।
दिशाहीन डूबता उतराता अंधकूप में,
नूतन पुरातन के मध्य मन उन्मन।